प्राक्कथन

प्राक्कथन

स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण होने के बाद मुझे एम्. फिल्. करने की इच्छा प्रकट हुई। यह भी सच है कि मेरी विशेष रुचि काव्य की ओर अधिक है। एम्. ए. अध्ययन के दौरान, मुझे अयोध्यासिंह उपाध्याय जी का 'प्रियप्रवास', मैथिलीशरण गुप्त जी का 'साकेत', 'यशोधरा', जयशंकर प्रसाद जी का 'कामायणी', सुर्यकांत त्रिपाठी का 'कुकरमत्ता' तथा नागार्जुन जी का 'प्रेत का बयान' आदि काव्य पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ।

एम्. फिल्. प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण होने के पश्चात् सौभाग्य से शोध-निर्देशिका के रूप में श्रद्धेय गुरुवर्या डॉ. सुलोचना अंतरेड्डी जी का प्राप्त होना मेरे लिए महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। आधुनिक काल के छायावादी कवि सुमित्रानंदन पंत और प्रगतिशील कवि रामगोपाल जी का नाम अग्रणी है। कोई भी साहित्यिक समकालीन विचारों को प्रस्तुत करता है। वे विचार निश्चित ही मनुष्य को तथा आज के पीढ़ी को प्रेरणादायी बन सकते हैं। रामगोपाल शर्मा जी और सुमित्रानंदन पंत जी ने देश की राजनीतिक समाज, आर्थिक दशा जैसे विषयों को लेकर 'विश्व-ज्योति बापू' और 'मुक्तियज्ञ' में विचार प्रस्तुत किया है। इसलिए उनका काव्य आज के युग में भी प्रेरणादायी बन सकते हैं। इन दोनों कवियों ने बापूजी के विचारों में मानवता, सत्य, अहिंसा, जातिवाद-शांति, एकता जैसे आदर्श रामराज्य की कल्पना थी।

इन दोनों काव्यों को पढ़ने के बाद मुझे दोनों काव्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना जरूरी समझा। इस विषय की चर्चा में मैंने मेरी निर्देशिका श्रद्धेय अंतरेड्डी मॅडम का और हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. पद्मा पाटील जी का योगदान मिला। अतः उनके विचार-विमर्श के दौरान ही मैंने '' 'मुक्तियज्ञ' और 'विश्व-ज्योति बापू' का तुलनात्मक अनुशीलन'' यह लघु शोध-प्रबंध पूरा करने का प्रयास किया है।

सुमित्रानंदन पंत का और रामगोपाल शर्मा 'दिनेश' का '' 'मुक्तियज्ञ' और 'विश्व-ज्योति बापू' का तुलनात्मक अनुशीलन'' इस विषय को लेकर आज तक अध्ययन नहीं हुआ है, उस कमी की पूर्ति के उद्देश्य से यह विषय लेकर प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध की रचना की गई है।

प्रस्तुत विषय को लेकर अनुसंधान के आरंभ में मेरे मन में निम्नलिखित प्रश्न निर्माण हुए वे इस प्रकार हैं -

1. सुमित्रानंदन पंत का और दिनेश का व्यक्तित्व एवं कृतित्व किस प्रकार रहा है ?
2. विवेच्य कृतियों में तुलनात्मक अनुशीलन कैसा रहा है ?
3. विवेच्य काव्यकृतियों में नायक की चारित्रिक विशेषताएँ कैसी हैं ?
4. विवेच्य काव्यकृतियों में बापूजी के द्वारा मानव जीवन का लक्ष्य कैसा है ?
5. विवेच्य काव्यकृतियों में गांधीजी तथा आज के युग की प्रासंगिकता किस तरह है ?

इन सभी प्रश्नों के प्राप्त हुए उत्तर प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के उपसंहार में दिए गए हैं।

अध्ययन की सुविधा के लिए मैंने लघु शोध-प्रबंध को पाँच अध्यायों में विभाजित कर विषय का विवेचन किया है।

प्रथम अध्याय - सुमित्रानंदन पंत और रामगोपाल शर्मा का व्यक्तित्व और कृतित्व

सुमित्रानंदन पंत और रामगोपाल शर्मा का जीवन परिचय में जन्म, बचपन, माता-पिता, पारिवारिक जीवन, शिक्षा, स्वभाव आदि का संक्षिप्त विवेचन किया गया है। व्यक्तित्व में उनके विविध पहलुओं को अंकित किया गया है। साहित्य के अंतर्गत उनके काव्य, नाटक, उपन्यास का संक्षिप्त विवरण दिया है। उन्हें प्राप्त पुरस्कारों का विवरण किया है। अंत में प्राप्त निष्कर्ष प्रस्तुत किए हैं।

द्वितीय अध्याय - 'मुक्तियज्ञ' और 'विश्व-ज्योति बापू' का अनुशीलन

प्रस्तुत अध्ययन में पात्र, सर्ग, रस, अलंकार, छंद, उद्देश्य, भाषा आदि का विवेचन किया गया है। अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है।

तृतीय अध्याय - 'मुक्तियज्ञ' और 'विश्व-ज्योति बापू' में मानव जीवन का लक्ष्य

प्रस्तुत अध्याय में सांप्रदायिक एकता, सत्य-अहिंसा, माता-पिता वात्सल्य, आदर्श दांपत्य जीवन, मानवता अस्पृश्यता निवारण, देश-प्रेम, निस्वार्थ सेवा, भारत के प्रति समर्पण भाव आदि का विवेचन प्रस्तुत किया गया है। अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है।

चतुर्थ अध्याय - 'मुक्तियज्ञ' और 'विश्व-ज्योति बापू' के नायक की चारित्रिक विशेषताएँ

प्रस्तुत अध्याय में आजादी के प्रेरक, अहिंसावादी संयमी, समतावादी, सत्यवादी, दलित-पीड़ित जनता के रक्षक वर्णभेद के विरोधक, अध्ययनशील, अथक कार्यशील, संस्कृति के रक्षक आदि का विवेचन प्रस्तुत किया है। अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है।

पंचम अध्याय - " 'मुक्तियज्ञ' और 'विश्व-ज्योति बापू' की प्रासंगिकता"

प्रस्तुत अध्याय में मानवता का प्रचार-प्रसार, मानव सेवा का महत्त्व, किसान जीवन का चित्रण, राष्ट्रीय भावना, आदर्श जीवन का संदेश, नैतिक मूल्यों की महत्ता आदि का चित्रण किया गया है। अंत में प्राप्त निष्कर्ष दिए हैं।

उपसंहार -

अंत में 'उपसंहार' में विवेच्य अध्यायों में प्राप्त तथ्यों के आधार पर निकाले गए निष्कर्ष दर्ज किए हैं। साथ ही प्राप्त उपलब्धियाँ, आधार ग्रंथ सूची तथा संदर्भ ग्रंथ सूची दी गई है।

शोध-कार्य की मौलिकता -

1. प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध सुमित्रानंदन पंत और रामगोपाल शर्मा का 'मुक्तियज्ञ' और 'विश्व-ज्योति बापू' का तुलनात्मक अनुसंधान इस विषय पर लिखा गया हिंदी अनुसंधान क्षेत्र का पहला लघु शोध-प्रबंध है।
2. प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में पंत और दिनेश जी के बहुमुखी व्यक्तित्व एवं कृतित्व का समग्र लेखा-जोखा वस्तुनिष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है।
3. प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में बापूजी की नायक की चारित्रिक विशेषताएँ प्रस्तुत की हैं।
4. प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में बापूजी के द्वारा मानव जीवन का लक्ष्य प्रस्तुत किया गया है।
5. प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में 'मुक्तियज्ञ' और 'विश्व-ज्योति बापू' इन दोनों काव्यों द्वारा आज की प्रासंगिकता प्रस्तुत की गई है।

ऋणनिर्देश

प्रस्तुत लघु कार्य को संपन्न बनाने में जिन ज्ञात-अज्ञात देवियों और विद्वानों तथा आत्मीय जनों ने सहायता की है, उनके प्रति 'ऋण-निर्देश' प्रकट करना मैं अपना परम कर्तव्य मानती हूँ।

मैं सर्व प्रथम आदरणीय गुरुवर्या सुलोचना नरसिंगराव अंतरेड्डी के प्रति कृतज्ञ हूँ। उनके विद्वत्पूर्ण और कुशल मार्गदर्शन का ही यह फल है। मुझे आपसे हमेशा प्रेम, परामर्श, प्रेरणा तथा उचित निर्देशन मिलता रहा। काफी कार्य-व्यस्तता के बावजूद भी आपने मेरे लिए समय-समय पर अमूल्य दिशा-निर्देशन किया। आप जैसे श्रद्धेय गुरुवर्या को शब्दों के फुलों में बाँधना मेरे लिए असंभव है। फिर भी मैं आप तथा आपके परिवार के प्रति हृदय से आभार प्रकट करती हूँ। आपका यह आत्मीयतापूर्ण स्वभाव मुझे जीवनभर याद रहेगा। मैं भगवान से प्रार्थना करती हूँ कि भविष्य में आपका स्नेह आशीर्वाद और आपकी अमीट छाया मुझ पर हमेशा बनी रहे।

हिंदी विभाग अध्यक्ष आदरणीय गुरुवर्या डॉ. पद्मा पाटील के प्रति भी कृतज्ञता प्रकट करती हूँ कि उन्होंने भी कार्य व्यस्तता के बावजूद मुझे प्रेरणा दी एवं सहायता की। हिंदी विभाग के गुरुवर्य डॉ. अर्जुन चव्हाण जी ने मुझे समय-समय पर बहुमूल्य मार्गदर्शन किया। मैं शतशः उनका आभार मानती हूँ। मैं शिवाजी विश्वविद्यालय के ग्रंथपाल, माथेकर सर, दिंडे सर तथा ग्रंथालय के सभी सदस्यों के प्रति आभार मानती हूँ। शिवाजी विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग की वरिष्ठ लिपिक संपत्ती पाटील मॅडम और सहायक श्री. शेळके मामा जी का मैं आभार प्रकट करती हूँ।

इस शोध-कार्य को पूरा करने के लिए मेरे दोनों बच्चों का प्रशिक और श्रावस्ती इन दो बच्चों ने बहुत सहयोग दिया है। ग्रंथालय जाने के लिए तथा पढ़ाई करने इतना बड़ा अवसर दिया कि मैं उनका आभार शब्दों में बयान नहीं कर सकती। मुझे पढ़ाई करते वक्त किसी भी तरह का नुकसान मेरे बच्चों ने नहीं किया। इसलिए मैं तहे दिल से उनका शुक्रिया अदा करती हूँ।

मैं अपने पिताजी बाळू गोविंदा कांबळे जी के प्रति भी आभार मानती हूँ। मेरी इस पढ़ाई पूरी करने के लिए तथा इस शोध-कार्य को संपन्न करने के लिए मेरे पिताजी का भी बहुत साथ मिला। मेरी स्वर्गवासी माताजी का आशीर्वाद भी हमेशा मुझपर रहा है। उनके प्रति भी मैं ऋणी हूँ। मेरे पिताजी ने पढ़ाई के लिए विश्वविद्यालय को कोल्हापूर को आने के बाद घर पर बच्चों की देखभाल का जिम्मा उठाने का काम बहुत ही सक्रियता से पूरा किया है। आजन्म मैं उनकी ऋणि रहूँगी। मेरी बहन करुणा तथा उसके पति तथा बच्चों का भी सहयोग प्राप्त हुआ। उनके प्रति भी आभार मानती हूँ।

मेरे पति श्री. विनोद बाळासो चव्हाण जी का शुक्रिया मैं किन शब्दों में करूँ मुझे समझ नहीं आता ? क्योंकि उनके सहयोग तथा अनुमती के बिना मैं अपना शोध-कार्य पूरा नहीं कर सकती थी। मेरे पति ने हमेशा पढ़ाई करने के लिए प्रेरणा तथा प्रोत्साहित किया है। आर्थिक सहयोग की भी उन्होंने बहुत मदत की है। मैं हमेशा उनकी ऋणि रहूँगी।

मेरी सास अकनाबाई कांबळे तथा ससूर बाळासो कांबळे जी की भी मैं बहुत ऋणी हूँ। मेरी ननंद, उनके पति तथा मेरे देवर तथा उनकी पत्नी का भी मैं आभार मानती हूँ। मेरे ससुराल और मायके के लोगों का स्नेह मुझे हमेशा मिला है। उनका भी मैं आभार मानती हूँ।

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के विवेकानंद कॉलेज के ग्रंथालय से अपार सामग्री मिली। अंतः मैं ग्रंथालय विभाग की आभारी हूँ।

साथ ही जिन ज्ञान-अज्ञातों की शुभकामनाएँ मुझे प्राप्त हुई उन सबके प्रति आभार प्रकट करते हुए मैं इस लघु शोध-प्रबंध को अत्यंत विनम्रता से विद्वानों के सामने परीक्षणार्थ प्रस्तुत करती हूँ।

शोध-छात्रा

(गौतमी बाळू कांबळे)

स्थान : कोल्हापुर।

तिथि :